18

मुद्रा एवं साख

मुद्रा का बदलता स्वरूप

हमारे दैनिक जीवन में हमें रुपयों और पैसों की आवश्यकता होती है। इनसे हम लेन–देन करते हैं। जहाँ हम इन रुपयों से आवश्यकता की अधिकांश वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदते हैं। वहीं हम लोगों को उनकी दी गई वस्तुओं और सेवाओं के बदले में भुगतान भी करते हैं। यही रुपए–पैसे मुद्रा हैं। इस प्रकार मुद्रा हमारे सभी वित्तीय लेन–देन को सुगम बनाने वाला माध्यम है।

मुद्रा का स्वरूप बदलता रहा है। हमने इतिहास के अध्यायों में लेन–देन के लिए धातुओं के उपयोग के बारे में पढ़ा है। धातुओं को सुरक्षित रखना अपने आप में एक कठिन कार्य था। एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में हमेशा चोरी का भय बना रहता था। व्यापार के लिए हर बार तौलने की सुगम व्यवस्था नहीं थी। बाद में कुछ समस्याओं का समाधान सिक्कों के चलन से हुआ। सिक्कों में तौल निश्चित होती थी और उनको प्रामाणिक करने के पीछे राजाओं की प्रतिष्ठा और पहचान होती थी। जैसे आप नीचे दिए चित्रों में देख सकते हैं।

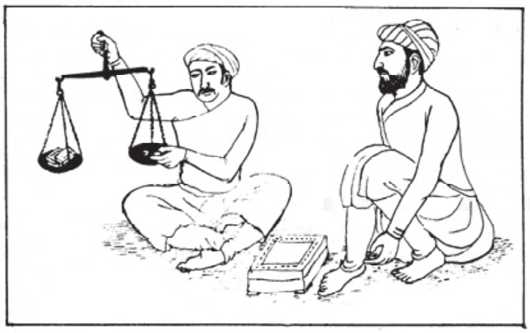

चित्र 18.1 : टकसाल में चाँदी तौलते हुए

चित्र 18.2 : व्यापारी टकसाल जाकर सिक्के बनवाते थे और फिर इनका उपयोग व्यापार में करते थे।

धातु के सिक्कों के रूप में मुद्रा का प्रचलन व्यापक हो गया। सिक्कों के रूप में मुद्रा के चलने पर इसमें सरलता के साथ कुछ खामियाँ भी सामने आने लगी थीं। सिक्कों की शुद्धता की जाँच करने पर हर जाँच में इसे खुरचने, छीलने और इनके भार में कमी के कारण व्यापारीगण इनकी शुद्धता और भार पर संदेह करने लगे। कुछ लोगों ने सिक्कों में मिलावटी धातुओं का भी इस्तेमाल करना प्रारंभ कर दिया। इन सभी परिस्थितियों से बचने के लिए सिक्कों के निर्माण व आकार में सुरक्षात्मक उपाय किए जाने लगे जैसे – सिक्कों की बाहरी गोलाई की परतें मोटी की जाने लगी।

चित्र 18.3 : भारत के सोने के सिक्के

चित्र 18.4 : ब्रिटिश कालीन भारतीय सिक्का

व्यापार के बढ़ने के साथ–साथ कुछ नई समस्याएँ आने लगी। सामान खरीदने के लिए उन्हीं सिक्कों की ज़रूरत होती जो उस क्षेत्र में स्वीकार्य हों और चलते हों। हर क्षेत्र में अलग–अलग सिक्के चलते थे। व्यापारियों की लेनदेन के लिए एक तरह के सिक्कों को दूसरे में बदलने की ज़रूरत होने लगी। इस तरह एक को दूसरे में बदलना अपने–आप में एक कारोबार बन गया।

भारत में व्यापारियों ने इस समस्या का एक हल निकाला। इससे उन्हें हर बार सिक्कों के ढेर एक जगह से दूसरी जगह नहीं ले जाने पड़ते। जिस शहर में उन्हें चीज़ें खरीदनी होती, वे उस जगह के लिए एक हुण्डी लिखवा लेते।

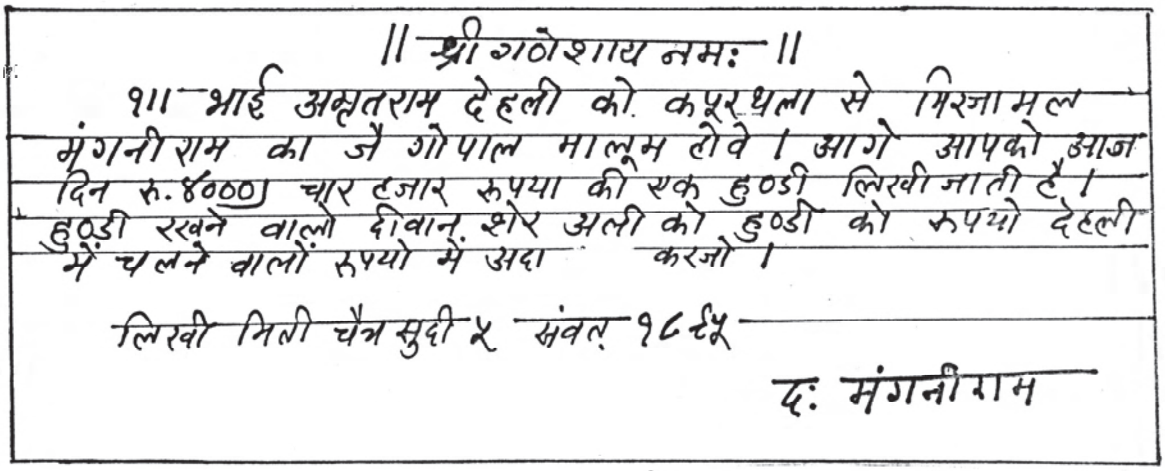

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

१॥ भाई अम्रतराम देहली को कपूरथला से मिरजामल मंगनीराम का जै गोपाल मालूम होवे। आगे आपको आज दिन रु. ४०००) चार हजार रुपया की एक हुण्डी लिखी जाती है। हुण्डी रखने वालो दीवान शेर अली को हुण्डी को रुपयो देहली में चलने वालों रुपयो में अदा करजो।

लिखी मिती चैत्र सुदी ५ संवत १८६५

द: मंगनीराम

चित्र 18.5 : हुण्डी

इस उदाहरण में कपूरथला के दीवान शेर अली को दिल्ली जाना था। मिरजामल मंगनीराम जो पैसों का कारोबार करते थे उनकी एक गद्दी (ऑफिस) दिल्ली में भी थी। दीवान शेर अली ने कपूरथला में मिरजामल मंगनीराम के यहाँ 4000 रु. जमा किए। मिरजामल ने दिल्ली में अपने मुनीम को पत्र लिखा कि वे दिल्ली में दीवान शेर अली को वहाँ चलने वाले पैसों में 4000 रु. अदा करें। दिल्ली में रुपए लेकर उन्होंने अपनी खरीदारी कर ली।

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यापारिक गतिविधियों का प्रसार बढ़ने के साथ ही मुद्रा के नए स्वरूप भी चलन में आने लगे। पत्र मुद्रा (Paper Currency) का चलन भी प्रारंभ हो गया। सराफा व्यापारी द्वारा रखे गए सोने या चाँदी की रसीदें प्रामाणिक मानी जाने लगीं, क्योंकि ये उन्हें सुरक्षित रखते और माँगने पर लोगों को उनका सोना व चाँदी वापस मिल जाता। इस प्रकार विश्वास बनता गया और व्यापारी आपसी लेन–देन के लिए सराफा व्यापारी द्वारा दिए गए वचन पत्र के आधार पर सौदों को स्वीकार करने लगे। इस तरह शुरुआती बैंक बनने लगे और उनकी स्वीकार्यता व्यापक रूप से बढ़ने लगी। साथ ही पत्र मुद्रा में विश्वास भी गहरा होता गया।

आधुनिक समय में मुद्रा के स्वरूप

आज हम लेन–देन के लिए रुपयों और पैसों का उपयोग करते हैं। इसके पीछे सर्वस्वीकार्यता की बात है। इसका चलन है क्योंकि सभी इसे स्वीकार करते हैं। विश्वास बनाए रखने के लिए सरकार इसे कानूनी रूप से अधिकृत मान्यता देती है। यह वैधानिक होती है इसलिए लेन–देन में कोई भी इसे अस्वीकार नहीं कर सकता।

पुरानी परम्परा के अनुसार आज भी रुपयों पर ''मैं धारक को......... रुपये अदा करने का वचन देता हूँ'' लिखा रहता है। पहले इस कथन के पीछे उसी कीमत का सोना या चाँदी देने का वचन लिखा रहता था। यदि आपको बैंक द्वारा दी गई पत्र मुद्रा पर विश्वास नहीं हो तो आप उतनी ही रकम का सोना या चाँदी ले सकते थे।

चित्र 18.6

आज इस वचन के पीछे केवल सरकार का विश्वास है कि आपके हाथ में जो रुपये का नोट है वह बाज़ार में चलेगा, वह स्वीकार होगा। उतने रुपयों की वस्तु आप खरीद सकते हैं। आज सर्वस्वीकार्यता और सरकार के प्रति लोगों के विश्वास पर रुपए–पैसों का चलन टिका हुआ है। सरकार यह विश्वास कैसे बनाए रखती है? इसके बारे में हम आगे पढ़ेंगे।

वर्तमान युग में हम वित्तीय लेन–देन के लिए नकद के साथ नकद रहित व्यवहार भी करते हैं। हम कुछ वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के लिए नकद रुपयों के अलावा चैक, डेबिट कार्ड इत्यादि के द्वारा भी भुगतान कर देते हैं। बैंक हमें हमारे खातों में जमा रुपयों के आधार पर चेक बुक, डेबिट कार्ड देते हैं। हम किन्हीं वस्तुओं, सेवाओं को खरीदने पर दुकानदार या विक्रेता को चेक देते हैं। वह दुकानदार उस चेक को अपने खाते में जमा करा देता है। बैंक द्वारा चेक प्रमाणित कर खाते में से उतनी रकम दुकानदार के खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है। इस प्रकार बैंक के खाते द्वारा लेन–देन आसान और सुगम हो जाता है। वर्तमान युग में बैंक खाते, मुद्रा का बड़ा एवं महत्वपूर्ण स्वरूप है।

बैंकों में ग्राहकों के पैसे मुख्यतः बचत खातों, चालू खातों और स्थाई जमा (फिक्स डिपॉजिट) के रूप में होते हैं।

बचत खातों में हम अपनी आय का कुछ हिस्सा जमा करते हैं, इसलिए इन खातों को बचत खाता कहते हैं। वहीं चालू खाते में व्यावसायिक ग्राहक अपने रुपयों को रखते हैं जिनकी ज़रूरत उन्हें अक्सर पड़ती रहती है। इन खातों में प्रतिदिन पैसे जमा किए जाते हैं और निकाले भी जाते हैं। इसलिए इन खातों को

चित्र 18.7 : कार्ड स्वाइप मशीन

चित्र 18.8 : डेबिट कार्ड

चालू खाता कहते हैं। चालू खाते एवं बचत खाते से हम जब चाहे पैसे निकाल सकते हैं या किसी को भुगतान करने के लिए चेक दे सकते हैं। यह हमारा पैसा है जिसे बैंक ने सुविधा एवं सुरक्षा प्रदान करने के लिए रखा है। बैंक यह वचन देती है कि माँगने पर हमें यह पैसे हमेशा उपलब्ध होंगे। इसलिए इन्हें माँग जमा (Demand Deposit) राशि कहा जाता है। इसी कारण यह लेन–देन को व्यावहारिक और सुगम बना देती है। इसे कुछ उदाहरण द्वारा समझते हैं।

डेबिट कार्ड आज भुगतान के साधन के रूप में आसानी से स्वीकार किए जाते हैं। बैंक हमारे खातों में जमा रुपयों के एवज में हमें एक कार्ड जारी करते हैं। इन कार्डो में हमारी खाते की जानकारी से लेकर हमारी व्यक्तिगत जानकारी होती है जैसे ही हम किसी चीज़ की खरीद पर दुकानदार को पैसे का भुगतान करने के लिए अपना कार्ड देते हैं, दुकानदार अपनी दुकान में रखी भुगतान मशीन में कार्ड डालता है। मशीन उस ग्राहक के बैंक खाते को प्रमाणित करती है। ग्राहक अपना पिन कोड डालकर उस भुगतान को स्वीकार करता है। इसके बाद उतनी रकम दुकानदार के खाते में ग्राहक के खाते से भेज दी जाती है।

आपने किसी दुकान से 15000 रु. की नकद रहित (Cash less) खरीदी की है और आपको दुकानदार को चेक से भुगतान करना है, उसे आप चेक किस प्रकार जारी करेंगे? नीचे उदाहरण के लिए एक प्रारूप दिया गया है आप इसे किस तरह भरेंगे? करके देखें।

चत्र 18.9 : चेक

बैंक में स्थायी जमा राशियों का भी उपयोग आसानी से कर सकते हैं। स्थायी जमा इसलिए कहते हैं क्योंकि इन्हें ग्राहक आमतौर पर निश्चित समय के पूर्व नहीं निकालना चाहते। बैंक अपने ग्राहकों को स्थायी जमा राशियों पर अधिक ब्याज भी देते हैं। नीचे दिए प्रश्न को हल करके समझ सकते हैं।

रेजीना के पास बैंक बचत खाते में 20000 रु. हैं और स्थायी जमा (एफ.डी) में 100000 रु.। उसे खरीदी पर दुकानदार को चेक द्वारा 40000 रु. देने हैं। उसे चेक देने से पहले क्या करना होगा? चर्चा करें।

ये सभी व्यवहार नकद रुपयों के खर्च किए बिना संभव हो जाते हैं। इसलिए इन्हें नकद रहित भुगतान कहते हैं। इनके आधार बैंक खाते हैं। हमने जाना कि बैंक हमारी जमा राशि के आधार पर ही नकद रहित सुविधा प्रदान करते हैं। अतः हमें नकद रहित भुगतान की सुविधा बैंकों के आपसी लेन–देन व्यवहार से ही संभव हो पाता है। हमारे खाते अलग–अलग बैंक में होते हैं, पर वे आसानी से एक खाते से दूसरे खाते में ट्रान्सफर हो जाते हैं। बैंक के बीच ये व्यवस्था सरकार ने बनाई है।

इनसे हमने जाना कि मुद्रा के दो स्वरूप होते हैं। एक, नकद राशि जो हमारे पास होती है दूसरी वह माँग जमा राशि जिन्हें हम बैंकों में रखते हैं और वह राशि माँगने पर बैंक हमें देती हैं।

वर्तमान में हमारे देश में पैसों के दोनों स्वरूपों की स्थिति का भण्डार इस प्रकार है :

31 मार्च वर्ष 2016 का स्टॉक	
लोगों के पास कुल नकद रुपये पैसे	13,86,000 करोड़
सभी बैंक में कुल माँग देय (बचत एवं चालू खाता)	8,91,000 करोड़
सभी बैंकों में लोगों के स्थायी जमा (फिक्स डिपॉजिट)	82,54,000 करोड़

स्रोत :– RBI 31 March 2016

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि बैंक व्यवस्था द्वारा निर्मित खाते हमारे लिए कितने ज़रूरी हैं। इन पैसों द्वारा लेन–देन होता है और बचत के रूप में भी रखा जाता है। इस बैंकिंग व्यवस्था को सुचारू रखना सरकार का काम है तभी इसमें विश्वास बना रहता है और हम सहज तरीके से इसका उपयोग करते हैं। अतः सर्वस्वीकार्यता बनी रहती है। बैंकों की देख–रेख कैसे की जाती है? इसके बारे में आगे पढ़ेंगे।

बचत खाता और स्थायी जमा (एफ.डी.) में क्या अन्तर है?

क्या धीरे–धीरे नकद का उपयोग कम होगा और बैंक खातों का उपयोग बढ़ेगा? चर्चा करें।

बैंक जाकर पता करें :–

यदि हमें किसी के खाते में बिना चेक लिखे, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सीधे पैसे ट्रांसफर करना है तो यह कैसे किया जाता है? (आरटीजीएस एवं निफ्ट के बारे में जानकारी प्राप्त करें)

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से लेन–देन करना, चेक की तुलना में किन मायनों में ज़्यादा सुगम है? क्या इसके कुछ खतरे भी हैं?

क्रेडिट कार्ड क्या है?

मुद्रा (पैसे एवं बैंक खाता) के विशिष्ट लक्षणों में हम पाते हैं कि ये सभी वित्तीय लेन–देन में स्वीकार्य होती हैं अतः मुद्रा की साख इसकी सार्वभौमिक स्वीकार्यता से होती है। यह हमारे लेन–देन को सरल बना देती है।

किसी देश के अन्दर वहाँ उपयोग होने वाले पैसों के आधार पर मूल्यों का मापन किया जाता है। किसी भी वस्तु या सेवा की कीमत पता करने के लिए मुद्रा ही अंकित करते हैं। मुद्रा का उपयोग कर कोई भी व्यक्ति तरह–तरह की वस्तुएँ भिन्न–भिन्न कीमतों पर खरीद सकते हैं अर्थात् व्यक्ति अपनी सभी आवश्यकता की वस्तुएँ जिन पर अलग–अलग कीमतें अंकित हों, उनकी माप रुपयों या मुद्रा में कर उनका भुगतान कर सकता है।

इस प्रकार प्रत्येक मुद्रा वर्तमान और भविष्य के संभावित भुगतान का आधार होता है। जैसे – हम किसी व्यक्ति से 10000 रु. दो वर्ष बाद में लौटाने की शर्त पर उधार लेते हैं तो दो वर्ष बाद हम मूलधन 10000 रु. की राशि ब्याज सहित मुद्रा में ही अदा करेंगे। उसी प्रकार आज हमारे पास पैसे हैं तो इसका उपयोग हम भविष्य में आसानी से कर सकते हैं। यही सुगमता मुद्रा को स्वीकार्यता प्रदान करती है। आज वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय वस्तुओं और सेवाओं में न होकर मुद्रा के माध्यम से होता है इससे वस्तु विनिमय की कठिनाइयाँ भी दूर हो गई हैं।

मुद्रा से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में समझाइए।

कई बार हम देखते हैं कि दुकानदार नकद के लिए टॉफी एवं चॉकलेट का उपयोग करते हैं। ऐसा क्यों? क्या यह व्यवस्था सुगम है? चर्चा करें।

अपने शब्दों में लिखिए कि मुद्रा कैसे देश में मूल्यों की मापन इकाई, भावी भुगतान का आधार होते हुए विनिमय का माध्यम बनती है?

मुद्रा का निर्गम

प्रत्येक देश अपने देश की मुद्रा का निर्गम केवल केंद्रीय बैंक के द्वारा ही करता है। यह केंद्रीय बैंक सभी बैंकों का भी बैंक होता है। भारतीय रिजर्व बैंक भारत सरकार का केंद्रीय बैंक है। यह भारत की सभी मुद्रा को छापने, निर्गम करने के लिए अधिकृत संस्था है। सिक्कों को भारत सरकार जारी करती है। हमारे आसपास दिखने वाले सभी बैंक वाणिज्यिक बैंक कहलाते हैं। इन्हें संचालन की अनुमति भारतीय रिजर्व बैंक ही देता है। यह सभी वाणिज्यिक बैंकों की नीतियों और नियमों का निर्धारण करता है। भारतीय रिजर्व बैंक की नीतियाँ ही वाणिज्यिक बैंकों की उधार लेन–देन, जमा राशियों पर ब्याज दर सहित उनकी सभी आर्थिक नियमावली को तय करता है।

चित्र 18.10 : (भारतीय रिर्जव बैंक, दिल्ली)

आइए हम कुछ देशों की मुद्राओं और उन्हें जारी करने वाले बैंकों की जानकारी प्राप्त करें। हमने देखा कि सभी देश अपने–अपने केंद्रीय बैंक के माध्यमों से ही अपनी मुद्रा और आर्थिक गतिविधियों का संचालन करते हैं। प्रत्येक देश की मुद्रा में उसके देश की कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ जैसे–इतिहास और व्यक्तियों की जानकारियाँ हमें सहज ही प्राप्त हो जाती है। हम कुछ देशों की मुद्राओं से उनके विषय में रुचिकर जानकारियाँ इकट्ठा करें।

(अपने शिक्षक के साथ करके देखें)

क्र.	देश	मुद्रा	जारीकर्ता बैंक
1	भारत	रुपया	रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया
2	बांग्लादेश	टका	बांग्लादेश बैंक
3	रूस	रूबल	बैंक आफ रशिया
4	अफगानिस्तान	अफगानी	सेंट्रल बैंक आफ अफगानिस्तान
5	चीन	....	....
6	संयुक्त राज्य अमेरिका	....	....
7	जापान	....	....

(रिक्त स्थानों में विभिन्न देशों की मुद्रा, और केंद्रीय बैंकों के नाम भरें)

गतिविधि :–

अपने शिक्षक की सहायता से विभिन्न देशों की मुद्राओं के चित्र, चार्ट संग्रह कर फाइल बनाएँ।

बैंक जाकर पता करें :– अलग–अलग खातों पर ब्याज दर के लिए उन्हें रिजर्व बैंक के किन नियमों का पालन करना होता है। एक रिपोर्ट तैयार करें।

बैंक के कार्य

हमने देखा बैंक का फर्ज बनता है कि माँगने पर खातेदारों को नकद पैसे अदा करे। बैंक के अनेक खातेदार होते हैं। कभी भी ऐसा नहीं होता कि सारे खातेदार अपने सारे पैसे निकालने बैंक आ जाएँ। मानो किसी बैंक के पास 2000 खातेदार हैं तो किसी एक दिन में 25–50 लोग नगद माँगने आएँगे। शायद महीने के शुरुआत में ज़्यादा और बाद में कम। यदि किसान खातेदार हैं तो बोनी के समय ज़्यादा नकद की माँग होगी और फसल कटने के समय पैसे जमा होंगे। हर दिन कुछ ही लोग नकद पैसे निकालने आते हैं और कुछ लोग जमा भी करते हैं। बैंकों को अपने अनुभव से पता चल जाता है कि दिन–भर में लगभग कितने नकद पैसों की ज़रूरत हो सकती है। उतने पैसों का बैंक प्रबन्ध रखती है।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने नियम बनाए हैं कि किसी भी बैंक के पास नकद की कमी न हो। माँगने पर लोगों को अपने पैसे नकद में दिए जाएँ, इस वचन में विश्वास बनाए रखना होता है। आमतौर पर सभी लोग अपना पैसा नक़द माँगने नहीं आते। वे उसे सुरक्षित रखना चाहते हैं और ज़रूरत पड़ने पर नकद निकालते हैं या फिर चेक से लेन–देन करते हैं। अतः सवाल उठता है कि बैंक इन खातों में लोगों द्वारा जमा पैसों का क्या करती है?

बैंक के दो प्रमुख कार्य हैं– लोगों के पैसे जमा करने के लिए खाते खोलना और लोगों की ज़रूरत के लिए कर्ज या ऋण देना। यह कार्य कि एक ही तराजू के दो पलड़े हैं।

आपने अक्सर सुना होगा कि दुकान लगाने के लिए, कारखाने लगाने के लिए, ट्रैक्टर या मोटर खरीदने के लिए बैंक लोगों को लोन या कर्ज देती है। लोगों को कर्जा देने के लिए बैंक के पास धन कहाँ से आता है? आपने देखा कि बहुत से लोग अपने बचत के पैसे बैंक के बचत या मियादी खातों में जमा करते हैं। बैंक में जमा पैसों से बैंक दूसरों को उधार या लोन देती है। कर्जदारों से जो ब्याज मिलता है, उसी में से पैसे जमा करने वालों को बैंक द्वारा ब्याज दिया जाता है और बैंक को चलाने के लिए खर्च किया जाता है।

चित्र 18.11 स्रोत :– एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 10वीं अर्थशास्त्र की पुस्तक

हमारे आसपास दिखने वाले बैंक ''वाणिज्यिक बैंक'' क्यों कहलाते हैं? चर्चा करें।

साख

हम अपनी आवश्यकता की अनेक वस्तुओं को खरीदने के लिए प्रायः अपने पास रखे रुपयों का उपयोग करते हैं। हमें कई बार ऋण लेने की ज़रूरत होती है। हम अपने परिचित, स्वजन व्यापारी या फिर ऋण देने वाली संस्थाओं जैसे – बैंक, वित्तीय संस्थाओं से उधार प्राप्त करते हैं। बैंक, व्यक्ति या फिर अन्य संस्थाएँ

"आपको कितना ऋण चाहिए मैडम।"

चित्र 18.12

हमारी वित्तीय क्षमता का आकलन करके ऋण प्रदान करती हैं जिन्हें हम कुछ समय बाद ब्याज सहित लौटाते हैं। हमें कई बार व्यापारी पैसे चुकाने के लिए समय देते हैं या सामान खरीदने के लिए पहले पैसे देते हैं। इन्हीं सभी ऋण या ऋण जैसी परिस्थिति को हम साख कहते हैं।

साख हमारी वर्तमान और भविष्य की कई आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता प्रदान करते हैं। ये हमारी तात्कालिक क्रय क्षमता अर्थात खरीदने की क्षमता में वृद्धि करते हैं वही बैंक या फिर व्यक्ति हमें ऋण देने के एवज में ब्याज के रूप में किराया प्राप्त करते हैं। यह ब्याज हम बैंक के पैसों को उपयोग करने के बदले में किराए की तरह कुछ समय के अंतराल में मूल राशि के साथ चुकाते हैं। इस तरह किसी संस्था या व्यक्ति के उधार से जहाँ एक व्यक्ति को अपनी आवश्यकता की चीज़ें मिल जाती हैं। वहीं दुकानदार की कुछ चीज़ें बाज़ार में ग्राहकों को ऋण सुविधा देने पर बिक जाती हैं। यह व्यवस्था ग्राहक और दुकानदार दोनों के लिए तात्कालिक हित साधने में सहायक होती है। आइए इसे हम एक उदाहरण से समझने का प्रयास करें।

सुरेश एक कामकाजी व्यक्ति है, उसे मासिक नियमित आय प्राप्त होती है, वह अपनी सीमित आय से अपने लिए एक आवास नहीं बनवा पाता है। उसे आवास ऋण से अपना मकान बनाने के लिए शर्तों पर ऋण मिल जाता है। सुरेश द्वारा बैंक से ऋण लेकर मकान बनाने के कारण मकान से जुड़े लोगों जैसे – भवन निर्माण सामग्री विक्रेता, कारीगर, सभी की वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री बढ़ती है इससे समग्र रूप में आय स्तर में वृद्धि होती है। सुरेश का नव निर्मित मकान बैंक या ऋण दाता के पास बंधक के रूप में रहता है। जिसे वह ऋण की राशि ब्याज सहित चुकाने पर 10 वर्ष बाद बंधक मुक्त कर पाता है। प्रायः सभी प्रकार के ऋण नकद या सम्पत्तियों को बंधक रखने पर ही प्राप्त हो पाती है। यहाँ ऋण सकारात्मक भूमिका अदा करता है।

ऋण की सुविधा एक ओर हमें अपनी आवश्यकता, आय, सम्पत्तियों में वृद्धि के अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर यह कई लोगों को ऋण के बोझ में जकड़ भी लेती है। नीचे दिए गए उदाहरण को देखें–

एक छोटी किसान स्वप्ना अपनी 3 एकड़ जमीन पर मूँगफली उगाती है। इस उम्मीद पर कि फसल तैयार होने पर कर्ज़ अदा कर देगी। खेती के खर्चों के लिए वह साहूकार से ऋण लेती है लेकिन कीटों के हमले से फसल बर्बाद हो जाती है। यद्यपि स्वप्ना फसल पर महँगी कीटनाशक दवाईयाँ छिड़कती है। उससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। वह साहूकार को पैसा लौटाने में असफल रहती है और साल के अन्दर यह ऋण बड़ी रकम बन जाता है। अगले साल, स्वप्ना खेती के लिए दुबारा उधार लेती है। इस साल फसल सामान्य रहती है, लेकिन इतनी कमाई नहीं होती कि वह अपना ऋण वापस कर सके। वह कर्ज़ के जाल में फँस जाती है। उसे ऋण को चुकाने के लिए अपनी जमीन का कुछ हिस्सा बेचना पड़ता है।

स्वप्ना के मामले में फसल बर्बाद हो जाने से उसकी ऋण अदायगी असंभव हो गई। उसे कर्ज़ उतारने के लिए अपनी जमीन का कुछ हिस्सा बेचना पड़ा। ऋण ने स्वप्ना की कमाई को बढ़ाने की बजाय उसकी स्थिति बदतर कर दी। इसे आम भाषा में कर्ज़–जाल कहा जाता है। इस मामले में ऋण कर्ज़दार को ऐसी परिस्थिति में धकेल देता है जहाँ से बाहर निकलना काफी कष्टदायक होता है। यहाँ ऋण ने नकारात्मक भूमिका अदा की है।

1. स्वप्ना का ऋण बड़ी रकम कैसे बन जाता है?
2. यदि एक व्यक्ति ज़रूरत के समय 10000 रु. का ऋण पाँच रुपए सैकड़ा के हिसाब से ले, तो उसे एक वर्ष के बाद कितने रूपए देने होंगे?
3. स्वसहायता समूह गिरवी रखने के शर्त को कैसे सम्हाल पाते हैं? चर्चा करें।

ऋण की शर्तें

चित्र 18.13

ऋण की परिस्थितियों को समझने के लिए ऋण की शर्तें समझना ज़रूरी हो जाता है। हर ऋण में ब्याज दर निश्चित कर दी जाती है जिसे कर्ज़दार मूल रकम के साथ अदा करता है। इसके अलावा, उधारदाता कोई भी चीज़ गिरवी रखने की माँग कर सकता है। ये ऐसी संपत्ति है जिसका मालिक कर्ज़दार है जैसे– भूमि, इमारत, गाड़ी, पशु, बैंकों में पूँजी और इसका इस्तेमाल, वह उधारदाता को गारंटी देने के रूप में करता है जब तक कि ऋण का भुगतान नहीं हो जाता। यदि कर्ज़दार उधार वापस नहीं कर पाता, तो उधारदाता को भुगतान प्राप्ति के लिए संपत्ति को बेचने का अधिकार होता है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर हम कह सकते हैं कि संस्थागत साख (बैकों, सोसाइटी, आदि) में ऋण की शर्तें सरल, कम ब्याज और ग्राहकों के अनुकूल होती हैं जैसे कि आपने कक्षा 9 में पढ़ा। किसान, छोटे व्यवसायी, कामगारों व ज़रूरतमंदों को सस्ते ऋण की उपलब्धता कराने के लिए सरकारी प्रयास जारी हैं। ये प्रयास उनकी सामाजिक सुरक्षा को बढ़ाने में सहायता करती है, साथ ही उन्हें ऋण के लिए सार्थक वातावरण भी प्रदान करने की कोशिश करती है।

परियोजना कार्य –

अपने आसपास के लोगों से चर्चा कर पूछें कि क्या उन्होंने कभी–कभी आवश्यकता की चीज़ों के लिए अल्पकालिक/दीर्घकालिक ऋण लिया है? यह सकारात्मक रहा या नहीं इस पर एक रिपोर्ट लिखें।

भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका

भारतीय रिजर्व बैंक का जिक्र किस–किस संदर्भ में आया है?

हमने देखा कि भारतीय रिजर्व बैंक का जिक्र कई बार आया है और इस व्यवस्था को बनाने एवं उसमें विश्वास बनाए रखने में उसकी अहम भूमिका है। बैंकों की व्यवस्था के कारण ही बैंक खाते मुद्रा का स्वरूप लेते हैं। अपनी ज़रूरतों के अनुसार हम नकद निकाल सकते हैं एवं चेक द्वारा लेन–देन कर सकते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक यह व्यवस्था बनाए रखने के लिए बैकों पर कई नियम लागू करवाती है।

उदाहरण के लिए बैंकों को अपने सभी डिपोजिट का 4 प्रतिशत भारतीय रिजर्व बैंक के पास नकद में रखना होता है ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसके पास नकद की कमी न हो। खातेदारों को माँगने पर नकद दिया जा सके, इसके लिए वे अपने अनुभव अनुसार अलग से नकद रखते हैं। इसी प्रकार बैंक को हर खातेदार के लिए 1 लाख का डिपोजिट बीमा करवाना होता है। यदि बैंक किसी परिस्थिति में नहीं चल पाए तो इस बीमा का उपयोग कर सकते हैं। कई बार बैंक के प्रति अफवाहें फैलती हैं कि बैंक घाटे में जा रहा है। लोगों के पैसे सुरक्षित नहीं हैं। ऐसी स्थिति में आर.बी.आई. को आगे आकर सम्हालना होता है क्योंकि बैकों की निगरानी करना उसका दायित्व है। भारतीय रिज़र्व बैंक को यह भी सुनिश्चित करना होता है कि बाज़ार में रुपये एवं पैसों की कमी न हो। इसके लिए ज़रूरत के अनुसार वह सरकार से नोट छपवाने और सिक्के बनवाने की माँग करती है। साथ ही सरकार को ये भी सुनिश्चित करना होता है कि बाज़ार में नकली नोट न चले इसलिए सख्त निगरानी भी रखनी पड़ती है।

भारतीय रिजर्व बैंक, बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋण के लेनदेन पर कई नियम लागू करती है। उदाहरण

के लिए कोई भी वाणिज्यिक बैंक अपने मुनाफे के लिए सम्पत्ति का क्रय–विक्रय नहीं कर सकती। यदि उसके पास कोई सम्पत्ति गिरवी रखी गई है और कर्जदार ऋण अदा नहीं कर पा रहा है तब ऐसी स्थिति में बैंक उस सम्पत्ति को बेचकर अपनी रकम वसूल सकती है। कुछ क्षेत्रों में जैसे कि शेयर बाज़ार में बैंक सीमित पैसे ही लगा सकता है। भारतीय रिज़र्व बैंक को सभी बैंकों की निगरानी करने का अधिकार है और यह सुनिश्चित करना कि उनके बैंकों द्वारा दिए गए ऋण सुरक्षित हैं और लोगों द्वारा वापस नहीं किए जाने वाले ऋण बहुत सीमित संख्या में हैं। कई बार इसके लिए सख्त कार्रवाई करने की भी ज़रूरत होती है। बैंकिंग व्यवस्था में लोगों का विश्वास बना रहे इसके लिए इस तरह की निगरानी आवश्यक है।

दूसरी तरफ सरकार के नियमों के अनुसार कई क्षेत्रों को महत्वपूर्ण माना गया है। अर्थात ऋण के लिए प्राथमिकता दी जानी चाहिए। बैंकों पर दबाव बनाया जाता है कि वे इन क्षेत्रों के लिए ऋण दें। वर्तमान में रिजर्व बैंक द्वारा कृषि, शिक्षा, आवास, छोटे उद्योग, निर्यात आदि क्षेत्रों के लिए 40 प्रतिशत ऋण देने का आदेश है।

इस प्रकार सरकार की भूमिका बैंकिंग व्यवस्था को बनाए रखना है ताकि वह सुगम और सुरक्षित रहे। इसके साथ–साथ विकास की दृष्टि से ऋण व्यवस्था को वंचित समूह या क्षेत्रों तक पहुँचाने का अहम लक्ष्य भी है।

YCVNNY

अभ्यास

1 सही विकल्प चुनकर लिखिए –

1. भारत सरकार का केन्द्रीय बैंक है –
   (अ) भारतीय स्टेट बैंक (ब) भारतीय सेन्ट्रल बैंक
   (स) राज्य सहकारी बैंक (द) भारतीय रिजर्व बैंक
2. मुद्रा के स्वरूप हैं –
   (अ) सोना–चांदी (ब) पशु
   (स) बैंक के चालू खाते (द) मकान
3. संस्थागत साख में शामिल नहीं है –
   (अं) बैंक (ब) सहकारी समिति
   (स) व्यापारी (द) सभी
4. ब्याज की दर किस खाते में अधिक होती है –
   (अं) बचत खाता (ब) चालू खाता
   (स) स्थाई जमा खाता (द) इनमें से कोई नहीं

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) ....हमारे लेन–देन को सुगम बनाने वाला माध्यम है।

(2) दस रूपए के पत्र मुद्रा पर .... के हस्ताक्षर होते हैं।

(3) मुद्रा का निर्गमन .... बैंक द्वारा होता है।

(4) ऋण में .... की दर निश्चित होती है।

(5) बैंक के .... खाते में ब्याज की दर कम होती है।

3. साख से क्या आशय है? अपने शब्दों में समझाइए?
4. मुद्रा के लिए मापन का आधार होना क्यों जरूरी है?
5. माँग जमा राशि से क्या अभिप्राय है?
6. बैंकों में ग्राहकों के पैसे किन–किन खातों में जमा होते हैं?
7. तीस वर्ष बाद मुद्रा के क्या नए स्वरुप हो सकते हैं अपने विचार लिखें?
8. सभी को ऋण उपलब्ध हो सके इसके लिए क्या करना चाहिए?
9. ऋण की सुविधा एक ओर हमारी आय बढ़ाने में सहायक होती है वहीं दूसरी ओर कर्ज़ के जाल में फँसा देती है कैसे? आस–पास के उदाहरण से समझाइए।
10. ऋण के लिए शर्तें जैसे ब्याज दर, समय, जमानत, गिरवी आदि की आवश्यकता क्यों होती हैं? प्रत्येक शर्तों को समझाइए।
11. यदि भारतीय रिजर्व बैंक वाणिज्यिक बैंकों पर नियंत्रण नहीं रखे तो मुद्रा एवं साख व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
12. व्यक्तिगत खर्च एवं व्यापार के लिए साख की आवश्यकता पड़ती है। कोई तीन उदाहरण देकर समझाइए।
13. बैंक में जमा रुपए को मुद्रा मानने के क्या आधार हैं?

- Website for Reference:
- https://www.rbi.org.in/scripts/ic_currency.aspx
- https://paisaboltahai.rbi.org.in
- एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 10वीं अर्थशास्त्र की पुस्तक
- कुरियन, *दौलत और बदहाली*